

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये सप्तत्रिंशं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে সপ্তত্রিংশং দশকম্ ॥

শ্রীকৃষ্ণারতারপ্রসঙ্গরণনম্

সান্দ্রানন্দতনো হরে ননু পুরা দৈরাসুরে সঙ্গরে
ৎরৎকৃত্তা অপি কর্মশেষ রশতো যে তে ন যাতা গতিম্।
তেষাং ভূতলজন্মনাং দিতিভুরাং ভারেণ দুরাদিতা
ভূমিঃ প্রাপ ঝিরিঞ্চমাশ্রিতপদং দেবৈঃ পুরৈরাগতৈঃ ॥ 37.1 ॥

হা হা দুর্জনভুরিভারমথিতাং পাথোনিধৌ পাতুকা -
মেতাং পালয হন্ত মে ঝিরশতাং সম্পৃচ্ছ দেরানিমান্।
ইত্যাদি প্রচুরপ্রলাপঝিরশামালোক্য ধাতা মহীং
দেরানাং রদনানি ঝীক্ষ্য পরিতো দধৌ ভরন্তং হরে ॥ 37.2 ॥

উচে চাম্বুজভূরমুনযি সুরাঃ সত্যং ধরিত্র্যা রচো
নন্রস্যা ভরতাং চ রক্ষণরিধৌ দক্ষো হি লক্ষ্মীপতিঃ।
সর্বে শর্পপুরস্সরা রযমিতো গৎরা পযোরারিধিং
নৎরা তং স্তমহে জরাদিতি যযুঃ সাকং তরাকেতনম্ ॥ 37.3 ॥

তে মুঞ্চানিলশালি দুঙ্কজলধেস্তীরং গতাঃ সঙ্গতা
যারত্বৎপদচিন্তনৈকমনসস্তারৎ স পাথোজভূঃ।
ৎরদ্বাচং হৃদযে নিশম্য সকলানানন্দযনুচিরা -
নাখ্যাতঃ পরমাঅ্ননা স্বযমহং রাক্যং তদাকর্ণ্যতাম্ ॥ 37.4 ॥

জানে দীনদশামহং দিরিষদাং ভূমেশ্চ ভীমৈনৃপৈ -
স্তৎক্ষেপায় ভরামি যাদরকুলে সোহহং সমগ্রাঅ্ননা।

देरा वृष्णिकुले भरुतु कलया देराङ्गनाशचारनौ
मंसेरार्थमिति एरदीयरचनं पाथोजडूरुचिरान् ॥ 37.5 ॥

श्रुंरा कर्णरसायनं तर रचः सरैषु निर्रापित -
स्वान्तेर्रीश गतेषु तारककृपापीयूषतृष्ठात्सु।
रिख्याते मधुरापुणे किल भरुंसान्निध्यपुण्योतरे
धन्यां देरकनन्दनामुदरहद्राजा स शूरात्तजः ॥ 37.6 ॥

उद्वाहारसितौ तदीयसहजः कंसोहथ सम्मानय -
नेतौ सूततया गतः पथि रथे र्योमोथया एरदिगिरा।
अस्यास्त्रामतिदुष्टमष्टमसुतो हन्तेति हन्तेरितः
सन्नासां स तु हन्तमन्तिकगतां तन्नीं कृपाणीमधां ॥ 37.7 ॥

गुहानश्चिकुरेषु तां खलमतिः शौरेश्चिरं सान्द्रनैः
नो मुष्णन् पुनरात्तजार्पणगिरा प्रीतोहथ यातो गुहान्।
आद्यां एरुंसहजं तथाहर्पितमपि स्नेहेन नाहन्नसौ
दुष्टानामपि देर पुष्टकरुणा दृष्टा हि धीरेकदा ॥ 37.8 ॥

तारुत्तुन्नसैर नारदमुनिः प्रोचे स ङोजेश्वरं
यूयं नन्नसुराः सुराश्च यदरो जानासि किं न प्रभो।
मायारी स हरिर्भरद्भधकृते भारी सुरप्रार्थना -
दित्याकर्ण्य यदूनदुधुनदसौ शौरेश्च सूनुहन् ॥ 37.9 ॥

प्राप्ते सप्तमगर्भतामहिपतौ एरुंप्रेरणान्मायया
नीते माधर रोहिणीं एरमपि ङोः सच्चिंसुखैकात्तकः।
देरक्या जठरं रिरेशिथ रिढो संस्रुयमानः सुरैः
स एरुं कृष्ण रिधुय रोगपटलीं भक्तिं परां देहि मे ॥ 37.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तत्रिंशं दशकं समाप्तम् ॥